निकम्मा लड़का

वह एक निकम्मा लड़का था। कम-से-कम उसके घरवालों का उसके बारे में यही ख्याल था। उसकी माँ और बड़े भाई उसके निकम्मेपन से खासे परेशान थे। यूँ उसकी एक छोटी बहन भी थी लेकिन माँ को वास्तविक चिन्ता उसी को लेकर थी कि पता नहीं बड़ा होकर क्या करेगा? कुछ करेगा भी कि नहीं? अरे लड़की का क्या है। हायर सेकेंड्री में पढ़ रही है। बी. ए. या एम. ए. कर लेगी तो शादी कर देंगे। लेकिन लड़कों के भविष्य का मामला तो इस तरह हल नहीं हो सकता। कितना कठिन समय है। अच्छी ढंग की नौकरी मिलना क्या आसान है? टेक्नीकल लाइन हो तो कैरियर बनाने में आसानी होती है। इसके लिए मेहनत चाहिए। इस निकम्मेपन से कुछ नहीं हो सकता।

सचमुच बहुत निराश किया उसने अपने घरवालों को। उसकी माँ सोचती थी कि वह कुशाग्र बुद्धि का है। पढ़ने में अच्छा है। उसे डॉक्टर बनना चाहिए। कभी किसी हॉस्पिटल में जाना पड़ जाए तब डॉक्टर होने का महत्व समझ में आता है। सफेद कोट पहने, गले में स्टेथस्कोप लटकाए और गम्भीर मुद्रा धारण किए हुए डॉक्टर देवदूत से कम नजर नहीं आते। आम आदमी टकटकी लगाए डॉक्टर की कृपादृष्टि का इस तरह मोहताज होता है कि साक्षात् ईश्वर, अगर कहीं हैं तो पिघल जाए। माँ ने उसे अपनी गिरती हुई सेहत का वास्ता देकर समझाना चाहा कि उसका साइंस पढ़ना और डॉक्टर बनना क्यों बेहद जरूरी है। इसके अलावा डॉक्टरों की कितनी प्रतिष्ठा और हैसियत होती है। वह सुनता रहा और आखिर में हँसकर बोला, "हाँ! छोटी बहन को जरूर डॉक्टर बनाना चाहिए। बहन की खुद की इच्छा भी डॉक्टर बनने की है।" माँ ने माथा पीट लिया, "इस लड़के से तो बहस करना ही बेकार है। आप इससे कुछ काम की कहिए तो फौरन दूसरा रास्ता दिखा देता है।"

उसके बड़े भैया का ख्याल कुछ दूसरा था। वे ठहरे इंजीनियर। एक बड़े व्यापारिक संस्थान से जुड़े हुए। प्रतिष्ठाजनक पद। आकर्षक वेतन। आधुनिक सुख-सुविधाओं से भरपूर सम्पन्न पारिवारिक जीवन। अक्सर विदेशों के चक्कर भी

लगते रहते। उनका कहना था कि उसे इंजीनियर बनना चाहिए। इंजीनियरी की पढ़ाई कम समय में पूरी हो जाती है जबकि एक अच्छा योग्य डॉक्टर बनने में कम से कम दस साल लगते हैं। समय और पैसे दोनों की बचत है। फिर इस क्षेत्र में पैसा कमाने के बहुत मौके हैं। अगर आप में कार्यकुशलता के कारण थोड़ी भी व्यावहारिक बुद्धि है तो आप करोड़ों के आदमी बन सकते हैं। कोई फर्क नहीं पड़ता कि नौकरी सरकारी है या गैर-सरकारी। हर जगह भरपूर पैसा पीटा जा सकता है। इसीलिए उसे मन लगाकर इंजीनियरी के इम्तिहान की तैयारी करनी चाहिए। थोड़ी-सी मेहनत कर लेगा तो जरूर किसी अच्छे इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा।

वह चुपचाप बड़े भैया की बातें सुनता रहा। कोई जवाब नहीं दिया। उनकी बात काटकर वह उन्हें दुख नहीं पहुँचाना चाहता था क्योंकि भैया साल-दो साल में कभी-कभार ही आ पाते। उस दौरान वे घर के बंदोबस्त, उसकी और बहन की पढ़ाई, उनके भविष्य तथा माँ की सेहत के बारे में ढेर सारी हिदायतें दे जाते। वे सभी लोग बहुत ध्यान से उनकी बातें सुनते और सहमति के अंदाज में सिर हिलाते रहते।

भैया चले गए और उसने माँ से स्पष्ट कह दिया कि उसे इंजीनियर भी नहीं बनना है। पैसा कमाने के लिए घर में एक आदमी बहुत है। उसकी समझ में नहीं आता कि सब लोग अगर इतना सारा पैसा कमाते रहे तो इन ढेर सारे पैसों का क्या होगा। कैसे खर्च किया जाएगा? पैसा ही कमाना हो तो उसके बहुत तरीके हैं। गणेशी काका को देखो। दर्जा आठ पास। पान की दुकान से कितना कमा लिया है। एक शानदार कोठी। सिविल लाइंस मार्केट में दो किराए पर उठीं दुकानें और वह लल्ला! लोग कहते कि वह स्मगलिंग करता है। साथ में अफीम का धंधा भी है। एक-एक रात में उसके हाथों से लाखों के वारे-न्यारे होते हैं। उसे तो लल्ला की शक्ल देखकर झुरझुरी छूटती है।

बहरहाल, उसने ऐलान कर दिया कि उसे न तो डॉक्टर बनना है और न ही इंजीनियर, उसे साहित्य पढ़ना है। इतिहास पढ़ना है। उसे अपने आपको, अपने

चारों ओर लोगों को पढ़ना है। इस दुनिया को पढ़ना है और समझना है।

बड़े भैया को जब पता चला तो वह बहुत नाराज हुए। उन्होंने गुस्से से भरी एक लम्बी चिट्ठी माँ को लिखी कि वह एकदम निकम्मा लड़का है। मेहनत नहीं करना चाहता। साहित्य-वाहित्य में क्या धरा है। वह अपनी जिन्दगी बेकार कर रहा है....और अन्त में उसे सख्ती से हिदायत दी थी कि वह इंजीनियरी के इम्तिहान में बैठने की तैयारी करे....कोई परेशानी हो तो उनके पास चला आए....। उसने चिट्ठी पढ़ी और फिर तह करके चुपचाप माँ को पकड़ा दी। माँ गुमसुम हो गई। फिर अपनी मजबूरी से बेचैन होकर बड़बड़ाने लगी। वह

बड़बड़ाहट सुनकर परेशान होने लगा और अपनी किताब लेकर छत पर चला गया। खुले आसमान के नीचे बैठकर काम करना उसे रोमांचित करता। अनन्त तक फैले और अपने सर के ऊपर छाए आसमान की मौजूदगी के अहसास से उसे लगता कि उसके ऊपर कोई गुरुतर भार हो। विशाल आकाश को संभाले रखने जैसी कोई बहुत अहम जिम्मेदारी उस पर आयद की गई हो। अपने को बेहद जिम्मेदार महसूस करते हुए वह और गहराई से अपने काम में डूब जाता। दिग्दिगंत से घूम-फिर कर आती अनुभवी हवाएँ उसके कानों में जीवन के सूत्र पढ़ जातीं। अपनी बाँहों में लपेट उसे दुलारती हुई उसके भीतर नई स्फूर्ति भर देतीं।

साहित्य की दुनिया में विचरते हुए वह एक दूसरी ही दुनिया में चला जाता। वहाँ सूरज एक नए अंदाज में उगता। उसकी लाली आसमान को एक नया अर्थ देती। फूलों की महक उसके आगे-आगे दौड़ती। उसे अजनबी रास्तों की ओर खींच लें जाती और अनजान गलियों में आँख-मिचौली खेलती हुई वह अन्त में कहीं गुम हो जाती। वह उस खुशबू को ढूँढता हुआ हर गली में घूमता। हर बन्द किवाड़ को खटखटाता। तब साँकल उतरती, किवाड़ खुलते और हर घर के भीतर बसी एक नई जिन्दगी से उसका साक्षात्कार होता। जिन्दगी के अनगिनत अछूते, अनबूझे सवालों से सामना होता। ज्ञान का असीमित भंडार एक छिपे खजाने की तरह जैसे

खुलकर उसके सामने बिखर जाता और वह अलीबाबा की तरह मुग्ध भाव से देखता हुआ ठगा-सा रह जाता कि क्या-क्या समेटे, कहाँ समेटे। उसे अपनी किताबों में अद्भुत दुनिया मिलती, जो उसके दिल और दिमाग से होती हुई उसकी उँगलियों के पोरों में सिमट आती। उसकी उँगलियाँ मचलने लगतीं, बेचैन हो उठतीं और अंततः उँगलियों के बीच फँसी कलम कागज पर दौड़ने लगती....

उसकी माँ उसके कमरे में घुसती, हर रोज की तरह उसके बिखरे कमरे को साफ करने के लिए। मेज पर फैले कागजों को वह समेटती। उन कागजों पर कोई कविता मुस्कुराहट बिखेर रही होती या कभी कोई चित्र पसरा हुआ होता। वह उन कागजों को सहेज कर रख देती। उसके सिरहाने से किताबों के ढेर उठाकर उन्हें अलमारी में लगा देती। न जाने रात-रात भर क्या पढ़ता रहता है....

एक बार उसके एक चचा आए। फौज में कर्नल। लम्बे-तडंगे, रौब-दाबवाले। हाल-फिलहाल में रिटायर हुए थे। बहुत जिन्दादिल और बातूनी। दो दिन वे रहे और घर उनकी लम्बी-लम्बी बातों और जोरदार ठहाकों से जगर-मगर करता रहा। कई मोर्चों पर लड़ी गई लड़ाइयों के किस्से सुनाते रहे।

"और बरखुरदार! अब तुम कहो अपनी। क्या कर रहे हो आजकल?"

"जी, पढ़ रहा हूँ अभी तो।" उसने धीमे-से जवाब दिया।

"अरे, पढ़ते तो सभी हैं इस उम्र में। यह बताओ कि क्या पढ़ रहे हो और आगे क्या करने का इरादा है?" सवाल के साथ ही पीठ पर एक जोरदार धप् लगाई उन्होंने।

"क्या बताऊँ भैयाजी, इस लड़के का तो दिमाग की उल्टा है। कुछ करना ही नहीं चाहता। मेडिकल लाइन के लिए कहा तो साफ इंकार कर दिया। इंजीनियरी के इम्तिहान में बैठने को कहा तो वह भी नहीं...." जवाब दिया माँ ने।

"भाभी! इसे तो आप मिलिट्री में भेज दीजिए। देखिए क्या पर्सनलिटी बनती है। अरे स्मार्ट लड़का है। बहुत बढ़िया रहेगा वहाँ...." उन्होंने जैसे पुचकारते हुए उसकी थाह लेनी चाही।

इससे पहले कि वह कुछ कहता, छोटी बहन बोल पड़ी, "चाचा, आप नहीं जानते, हमारे ये आर्टिस्ट भैया लड़ाई और मारपीट इन सबसे कोसों दूर रहते हैं। कहीं झगड़े-फसाद का जरा भी अंदेशा हो तो छोटे भैया जनम-जिन्दगी वहाँ नहीं

फटकेंगे।"

वह मुस्करा दिया।

"मैं आपकी तरह बहादुर नहीं हूँ चाचा। मुझे तो मरने से बहुत डर लगता है।" उसने अपने दिल की एक कठिन बात बहुत सरलता से कह दी।

"वाह, वाह! इतिहास की मोटी-मोटी किताबें पढ़ते हो। लड़ाइयों के किस्से पढ़ते हो, और लड़ने से डरते हो? बिना लड़ाई लड़े कोई इतिहास-पुरुष नहीं बनता माय डियर बॉय...." और चाचा हो-हो-हो-हो कर हँसने लगे जैसे कोई बहुत महत्वपूर्ण वाक्य बोला हो उन्होंने।

"इतिहास में लड़ाइयों की कहानियाँ पढ़ना एक बात है चाचा और आमने-सामने खड़े होकर दुश्मन से लड़ना अलग। क्यों चाचा, सचमुच आप लोगों को लड़ाई के मैदान में डर नहीं लगता?"

"डर? अरे मरने का डर किसे नहीं होता। लेकिन वहाँ, लड़ाई के वक्त अपनी जान का ख्याल ही नहीं आता। उस वक्त दुश्मन के नाम पर दिल में एक आग-सी लगी होती है। सामने टारगेट होता है। सिर्फ अपना टारगेट। वह दुश्मन जो हमारा चैन छीन रहा है, उसे सामने पाकर कौन पीठ मोड़कर भागेगा। यह तो जीते-जी मौत होगी बेटे। एक बार पीठ मोड़कर भागेंगे और सारी जिन्दगी मुर्दे की तरह मरे-मरे जिएँगे। एक बार जीओ और बहादुर की तरह जीओ...." और फिर एक जोरदार ठहाका और उतने ही जोर की धप् पड़ी पीठ पर।

उस रात बहुत देर तक सोचता रहा वह। उसने चाचा से सच कहा था। सचमुच बहुत डरपोक था वह। पिछली साल उनके शहर में दंगा हो गया था। पूरे शहर में कर्फ्यू लग गया। उनके इलाके में हालाँकि कोई वारदात नहीं हुई लेकिन कर्फ्यू की चपेट में उनका मुहल्ला भी आ गया था। वे बहुत मुश्किल दिन थे। रात-रात भर जागता रहता वह। दूर-दराज से आनेवाली चीख-पुकार और धमाके की आवाजें रात के सन्नाटे में वहाँ तक पहुँचते-पहुँचते जैसे कई गुना बढ़ जातीं और वह बेचैन हो उठता। उसे लगता कि कोई उसके घर के नीचे ही चीख रहा हो। गोलियों की आवाजें जैसे पड़ोस के किसी मकान से आ रही हों। सभी घरों के लोग परेशान और डरे हुए थे। लेकिन उस जैसी हालत शायद और किसी की नहीं थी। उसका तो खाना-पीना और सोना भी दूभर हो गया था। सब लोग उसका खूब मजाक उड़ाते।

कुछ दिनों बाद शहर के अन्य इलाकों के साथ उनके मुहल्ले में भी फौज की तैनाती हो गई। जब से दस सिपाहियों की एक टुकड़ी उनके मुहल्ले में आई, चारों ओर लोगों को सुकून हो गया। अब लोगों की दिनचर्या में इत्मीनान था। यूँ कर्फ्यू की वजह से बाहर आने-जाने में बंधन था। कुछ और परेशानियाँ भी थीं लेकिन लोगों के मन में भय न था। रात में वे चैन की नींद सोते थे।

लेकिन उस लड़के के मन में तो अभी भी सुकून नहीं था। अजीब तरह की बेचैनी उसके अन्दर भर गई थी। सिपाहियों की टुकड़ी जब उसके घर के पास से गुजरती तो उनके भारी बूटों की आवाज उसे किसी अनजाने युद्ध-क्षेत्र में खींच ले जाती। अपनी कल्पना में उसे लगता जैसे किसी भारी-भरकम फौज के सामने वह निहत्था खड़ा है। बूटों की खट्-खट्-खट् जैसे तोप के गोले बनकर उसके माथे से आर-पार हो जाते। वह घबड़ाकर खिड़की का पर्दा सरकाकर उन्हें देखता रहता जब तक वे आगे मोड़ पर जाकर आँखों से ओझल न हो जाते।

"ये लड़का तो पगला गया है। न रात चैन और न दिन में आराम।" उसकी माँ उसे देख-देखकर परेशान होती। "अरे कुछ काम-धाम कर। खाली बैठे-बैठे किताबें पढ़ते रहने से यही होगा।"

तब वह सचमुच अपने निकम्मेपन पर खीझने लगता। अपने डरपोक स्वभाव पर उसे शर्म आने लगती और फिर किताबों के बीच मुँह डालकर बैठ जाता।

•

उस दिन सवेरे जब वह सोकर उठा, तो बहुत खुश था। जैसे कोई अच्छी किताब पढ़ने के बाद बहुत दिनों तक मन में खुशी और ताजगी भरी रहती है। उसने खिड़की पर पर्दा सरकाया। मौसम भी उसके मन जैसा ही शान्त और खुशगवार था। सफेद बगुलों का एक झुंड उड़ता हुआ तेजी से उसके सामने से गुजर गया। उनके सफेद पंख सूरज की कच्ची धूप में चाँदी की तरह चमक रहे थे। वह मुग्ध भाव से देर तक उस ओर देखता रहा जिस दिशा में वह उड़ते हुए चले गए थे। अचानक चिटिर-चिटिर की तेज आवाज ने उसका ध्यान तोड़ा। नीचे लॉन पर दो टिटहरियाँ लड़ रही थीं। थोड़ी दूर पर टिटहरी के दो बच्चे दुबके हुए थे। बीच-बीच में वे बच्चे चोंच उठाए आगे बढ़ते और फिर अपनी जगह पर वापस आ जाते।

उन्हें सम्भवतः अपनी माँ के पराक्रम पर पूरा भरोसा था इसलिए निश्चिन्त थे। सचमुच थोड़ी देर बाद मादा टिटहरी ने उस आनेवाली टिटहरी को चोंच मार-मारकर भगा दिया। अब वह इत्मीनान से अपने बच्चों के साथ घूम रही थी और दाना चुग रही थी। उसने खिड़की बन्द कर दी और सीटी बजाता हुआ कॉलेज के लिए तैयार होने चल दिया।

दिन बीता और शाम हो आई। आज उसकी क्लास देर तक थी और उसके घर लौटने का समय हो गया था। तभी उसका एक दोस्त उसे पूछता हुआ आया। पता चला कि घर से थोड़ी दूर, पीली कोठी के पास बहुत भीड़ थी। शायद कुछ झगड़ा हो गया था। वहीं सड़क के किनारे उसका स्कूटर खड़ा था लेकिन उसे वहाँ न देखकर दोस्त उसे पूछता हुआ घर चला आया। यह सुनकर उसकी माँ घबड़ा गई। सड़क के किनारे स्कूटर खड़ा करके कहाँ चला गया वह?

"तुम बेकार फिक्र कर रही हो माँ। सड़क पर भीड़ होगी और निकलने के लिए रास्ता नहीं होगा, इसलिए भैया स्कूटर वहीं खड़ा करके इधर-उधर कहीं चले गए होंगे।" बहन ने पूरे विश्वास के साथ कहा।

"हाँ। ऐसा ही हुआ होगा। मैंने सोचा कि कहीं वह झगड़े में न फँस गया हो। वहाँ मैंने लल्ला के आदमियों को भी देखा था। बहुत फसादी हैं वे लोग, इसलिए मैं घबड़ा गया और उसे तलाश करता हुआ यहाँ पूछने चला आया।" उसके दोस्त ने भी राहत महसूस की।

"भैया ऐसे मामलों में बहुत समझदार हैं। बिना बात लड़ाई-झगड़ों में नहीं पड़ते।" और बहन हँसने लगी। उसका दोस्त वापस चला गया।

लेकिन, थोड़ी देर बाद उनका आँगन लोगों से भरा हुआ था। चारपाई पर वह डरपोक और निकम्मा लड़का खून में नहाया हुआ पड़ा था। उसकी अधमुँदी आँखें शायद कोई सपना देख रही थीं। फूलों से भरा कोई बगीचा, कोई झरना-नदी या पहाड़ियों के बीच बसी कोई खुशनुमा शान्त वादी या फिर कोई लड़ाई का मैदान और आमने-सामने डटी हुई फौजें....बूट पहने हुए सिपाही....लल्ला और उसके आदमी....धाँय-धाँय छूटती हुई गोलियाँ....गरजती हुई तोपें....। पड़ोस का डॉक्टर जिसने अभी-अभी उसे एक इंजेक्शन दिया था, अब उसकी नब्ज टटोल रहा था।

हाँफते-काँपते, टूटे-फूटे शब्दों में उसके दोस्त ने बताया कि वह कॉलेज से लौट रहा था। पीली कोठी के बगलवाले मकान के सामने लल्ला अपने साथियों के साथ मौजूद था। वे लोग उस मकान को खाली कराना चाहते थे और कई दिनों से कोशिश कर रहे थे। उस मकान में एक बेवा अपनी लड़की के साथ रह रही थी। लगभग दो साल पहले उस लड़की के पिता का देहान्त हो चुका था। लल्ला दो-तीन बार पहले भी उन औरतों को धमकी दे चुका था, लेकिन उसका उन पर कोई असर नहीं हुआ। वह सरकारी मकान था जिसका वे लोग नियमित रूप से किराया दे रहे थे। आज शाम को वह लड़की टाइप स्कूल के लिए निकल रही थी कि तभी लल्ला और उसके आदमियों ने उसे घेर लिया। उसके कपड़े खींचते हुए वे उस लड़की की सरेआम बीच सड़क पर बेइज्जत करना चाहते थे। एक बार इस तरह बेइज्जती होने के बाद वे औरतें आसानी से मकान छोड़कर चली जातीं।

वह कॉलेज से लौटता हुआ उधर से गुजरा। उस लड़की को घेरते हुए और बेहूदगी करते हुए उन लोगों को उसने देखा। वह आगे निकल चुका था जब उस लड़की और उसकी माँ के चिल्लाने तथा पुकारने की आवाज उसके कानों में गूँजी। आगे बढ़ते-बढ़ते वह फिर पलट कर पीछे आया। उसने देखा कि आस-पास खड़े कुछ लोग सिर्फ तमाशा देख रहे हैं। कुछ सेकण्ड खड़ा वह भी उन लोगों को देखता रहा। लल्ला पहले भी इस तरह की हरकतें कर चुका था। उसे लल्ला से बेहद नफरत थी। तभी लल्ला के एक साथी ने उस लड़की के पूरे प्रतिरोध के बावजूद उसकी साड़ी खींचकर अलग फेंक दी। यह सब देखते हुए उसे लगा कि उसका दम घुट रहा है। एक फंदा-सा कसने लगा उसकी गर्दन के चारों ओर जिसका छोर लल्ला खींच रहा था। बीच सड़क पर बैठी और रोती-चिल्लाती उस लड़की और उसकी माँ को इस हाल में छोड़कर वह अगर आगे बढ़ गया तो उसकी गर्दन पर लगा फंदा कसता ही चला जाएगा और वह घुट-घुट कर मर जाएगा। उसे लगा कि उसके पैर पत्थर के हो गए हैं। किसी तरह इस मौके से भाग भी गया तो वह जी नहीं पाएगा जिन्दगी भर....

उसने स्कूटर बन्द करके वहीं खड़ा कर दिया। दोनों हाथों से अपनी गर्दन के चारों ओर लगे अदृश्य फंदे को जैसे अलग किया और सीधा घुसता चला गया,

उन लोगों के बीच में, अभिमन्यु की तरह।

मुहल्ले के सबसे दब्बू और डरपोक लड़के को सीधा अपनी ओर आते देखकर लल्ला और उसके साथी एकबारगी अचकचा गए। पागल तो नहीं हो गया....शायद लल्ला से कुछ कहने आ रहा हो....उन लोगों ने सोचा। जब डर से काँपती हुई उस लड़की का हाथ पकड़कर और उसे घेरे हुए लड़कों को धक्का देकर हटाते हुए वह घर के अन्दर जाने लगा तब उन लोगों की समझ में कुछ आया। उन लोगों ने अब उसे घेर लिया और उसके ऊपर पीछे से वार किया ....फिर तो बहुत कुछ हुआ। वही जो ऐसे मौकों पर होता है। हाँ! उन बदमाशों के बीच उसे इस तरह घुसता देखकर भीड़ अब उसके चारों ओर जुट गई। चोट खाकर वह तो जरूर नीचे गिरा लेकिन अब लोगों में हिम्मत आ गई थी और वे लल्ला और उसके साथियों से भिड़ गए थे....

लोग उसकी हिम्मत की दाद दे रहे थे और उसका कारनामा बखान कर रहे थे। उसकी माँ सुन रही थी और उसकी आँखों से जारो-कतार आँसू बह रहे

थे। बेहोश पड़े बेटे के सिर पर हाथ फेरते हुए वह सोच रही थी कि उसका इंजीनियर बेटा आएगा। फिर नाराज होगा—"रहा न परले दर्जे का मूर्ख। एक अनजान लड़की के पीछे इस तरह जान गँवाना...क्या अक्लमंदी है? ऐसे किस्से तो हमेशा, हर गली-मुहल्लों में होते रहते हैं। लेकिन इस निकम्मे लड़के की तरह कोई अपनी जान खतरे में नहीं डालता...."

एकाएक अजीब शर्म से भर गई माँ। अरे, यह उल्टा-सीधा क्या सोचने लगी मैं....उसने जोर से सिर झटका। बेटे के सिर पर हाथ फेरते हुए उससे लिपट गई वह।

"माँ। एंबुलेंस आ गई"....बहन ने आकर खबर दी।